thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ०३ ● २० जनवरी, २०१५ माघ अमावस्या, सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

युवा शक्ति एवं भक्ति का समन्वयक .....

ब्र0 राज सिंह आर्य

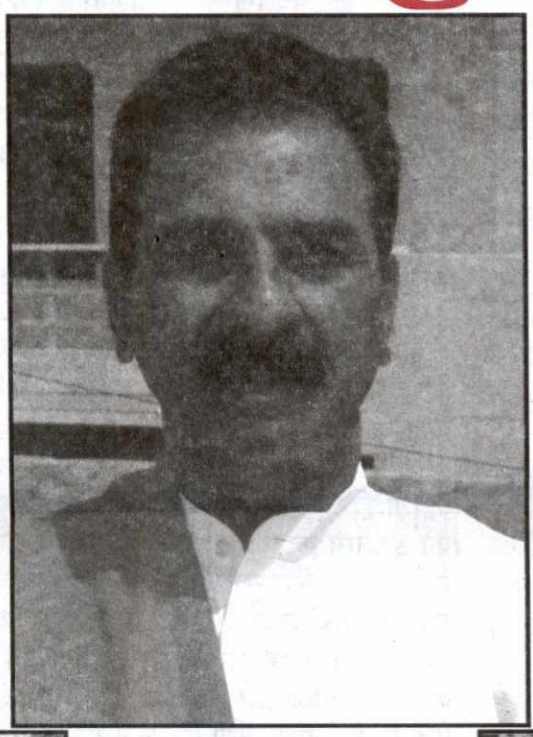

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
(गुरूकुल पूठ गढ़ हापुड़ उ0प्र0)

प्रातः कालीन दिनचर्या में ईश्वर प्रणिधान द्वारा साधना के पथ का पथिक, यज्ञ एवं होम का आधार बनाकर जीवन के संतुलन को समाज के लिए अहर्निश सुदृढ़ करने का स्वप्न साकार करने के लिए प्रयत्नशील व्यक्तित्व, कुर्ता एवं धोती धारण कर गौरिक उत्तरीय वस्त्र से सुशोभित होकर प्रसनवदन सदैव अभ्यामत से मिलकर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति से शोभायमान रूप को देखते ही ब्र0 राज सिंह आर्य की प्रतिमूर्ति दृष्टिगोचर होने लगती है। वे स्वयं निर्मित होकर समाज के निर्माण में विश्वास रखते थे उसी के लिए उनका चिन्तन था उसी के लिए उनकी दिनचर्या थी उसी के लिए उनका प्रयास दिनचर्या को सार्थकता में परिवर्तित करता था। वे बाजी के कलाकार थे वे हृदय से संपृक्त होकर अपनी भावनायें प्रकट करते हुए जब प्रवचन करते थे वो स्वयं भी रोकर श्रोताओं को भी रूलाने का सामर्थ्य रखते थे। वे वीर रस की भावनाओं से युवाओं में उत्साह भी पैदा करने का सामर्थ्य रखते थे। समाज निर्माण का स्वप्न साकार करने के लिए जब अपनी योजनायें प्रारम्भ करते थे तो श्रेष्ठ लोग अपनी उदारता से उनके सहयोगी बनने के लिए आतुर हो उठते थे और उनकी इच्छानुसार उन्हें महराणा प्रताप समझकर स्वयं भामाशाह बनने का सौभाग्य अनुभव करते थे यह उनके शब्दों के संयोजन का चमत्कार जब हृदय से मिलकर आत्मीय रूप में प्रकट होता था तो आबाल वृद्ध प्रभावित होकर उनके गुणगान के लिए बाध्य हो उठता था। सार्वदेशिक आर्यवीर दल में लम्बे समय तक उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वे महामन्त्री पद पर रहकर उसका संवर्द्धन करते रहें और दिल्ली में एक महासम्मेलन करके आर्यजगत में नवीनता का संचार किया। प्रभु की परीक्षा में भी उत्तीर्ण होकर दिखाया स्वामी देवव्रत जी प्रधान संचालक जी की अध्यक्षता में अभूतपूर्व दृश्यों का वातावरण सदैव अविस्मरणीय रहेगा उसी से उन्हें आर्यजगत में विशेष सम्मान भी प्राप्त हुआ। राज नेताओं का भी सहयोग प्राप्त किया और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का स्वप्न भी साकार करने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया। जो दिल्ली रोहिणी में एक उदाहरण बनकर अपने नाम को सार्थक करने में सफल हुए उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पद पर सुशोभित रहे लेकिन देश विदेश में वेद प्रचार के कार्य में भी सदैव प्रयास करते रहें। आपकी योजनाओं में सहयोगी महानुभावों की सूची बहुत लम्बी है लेकिन विनय आर्य मन्त्री, धर्मपाल आर्य, जैसों का सहयोग न मिलता तो सम्भवत इतना बड़ा कार्य सम्भव नही था। अतः आप को सर्वात्मना सहयोगी मिले यह भी आप का सौभाग्य ही कहा जोयगा। आप इतने व्यस्त एवं उच्च स्तरीय नेता बनने के बाद भी सामान्य ग्रामीण आर्य समाजों के सम्मेलनों में भी जाने में उत्साह पूर्वक प्रसन्नता से स्वीकृति प्रदान करके आर्यो को उत्साहित करते थें। एक दिन चर्चा करते हुए अचानक बोले कि आपने अपना गुरूकुल पूठ कभी नही दिखाया। मैनें कहा कि गरीबों के यहां कौन जाता है। आप तो बड़े बड़े शहरों व नगरों तथा विदेशों में ही अधिक व्यस्त रहते है। तो बोले एक बार बुलाकर तो देखों जरूर आऊंगा। मैने मार्च की तिथियां लिखवा दी, न विज्ञापनों में नाम छपवाया और न ही निमन्त्रण पत्र ही भिजवाया यही मान कर की लोग मिल जाते है कि आप औपचारिकता वश कह ही देते है। लेकिन सम्मेलन के पूर्व ही सायं काल एक सज्जन के साथ गुरूकुल के मुख्य द्वार पर मैनें ब्र0 राज सिंह आर्य जी को देखा तो महद् आश्चर्य युक्त प्रसन्नता को मैं छिपा नही सका और पूरे तीन दिन तक वे गुरूकुल मे रहें। सामान्य रूप से रहते हुए अनुभव नही होने दिया कि मै कोई विशेष सुविधाओं की अपेक्षा रखता हूँ। तीनों दिन आपके विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई और उनके प्रवचनों को आज भी लोग याद करते है। आप की उदारता और महानता के लिए आज भी मेरे हृदय में उनके लिए जो सम्मान है उसे में कभी भूल नही सकूंगा। चलते समय जब दक्षिणा देने का प्रयास किया तो बोले कि गुरूकुल महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को फैलाने की फैक्ट्री है। इन्हें सहयोग देने की बात होनी चाहिए। लेने को तो बहुत बड़ी दुनिया पड़ी है। यहां तो देने की बात होनी चाहिए आप ने तो किराया लेना भी स्वीकार नही किया। तब से मुझे लगा कि वास्तव में यह मिशनरी भावना से कार्य करने में इसी लिए सफल है कि यथा योग्य संस्थाओं को प्रोत्साहन प्रदान करके उनका मनोबल भी बढ़ाते है कोई कितना बड़ा महान वैसे ही हवा में नही बन जाता है। आपकी दिनचर्या, आपका जीवन, आर्य समाज एवं आर्यवीर दल के लिए ही समर्पित रही। बैठक में आप की योजनाओं को सुनने में भी अच्छा लगता था और आपकी ही इच्छा के प्रति सभी अधिकारी प्रभावित होते थे। दिल्ली में गुरूकुल मौजमनगर अथवा किसी आर्य समाज के कार्यक्रम में, बैठक में जहां भी मिले सदैव आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने की योजनाओं की तैयारी करते रहें और उसी के लिए आपका जीवन समर्पित रहा। अभी आर्य सन्देश में समाचार पढ़ा कि ब्र0 राज सिंह ने धर्मपाल आर्य को दिल्ली सभा का प्रधान बनाने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किया और सर्वसम्मति से निर्वाचन सम्पन्न हो गया और यह कहा कि यह परम्परा स्थापित होनी चाहिए पढ़कर प्रसन्नता हुई और विचार कर ही रहा था कि उन्हें फोन पर बधाई दूंगा लेकिन किसकों पता था कि फोन पर जो सूचना आ रही है वो इतनी दुःखद है जिसे प्रत्येक आर्य सुनकर हतप्रभ रह जायेगा। मुझे भी ऐसी ही दुःखद अनुभूति हुई। पूरा गुरूकुल शोकमय हो गया और शान्ति यज्ञ तथा शोक सभा करके उनके प्रति मौन धारण किया आज कुछ उनकी पुरानी स्मृतियों में खो जाने पर जो भी विचार मन में आये उन्हें उनके प्रति स्मृति की धरोहर में सुरक्षित रखते हुए आर्यजनों तक निवेदन करना चाहता हूँ कि आर्य समाज की प्रतिष्ठा आज आर्यों एवं समाजों के अधिकारियों के हाथों में सुरक्षित है। आर्य समाज के उपदेशक, विद्वान, सन्यासी, आपके माध्यम से ही इस दिशा में आपके प्रेरणा श्रोत बन सकते है। ब्र0 राज सिंह समर्पित व्यक्तित्व के प्रति "आर्यमित्र" परिवार, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 एवं गुरूकुल पूठ तथा आर्यवीर दल उ0प्र0 की ओर से उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांन्जलि प्रदान करता हुआ परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हम सभी आर्यो को भी इसी प्रकार का उत्साह प्रदान करें।

कही न कही कोई त्याग, तप, बल, साधना, भक्ति की शक्ति, आत्मा की शक्ति ही तो सामाजिक शक्ति को बढ़ाने में सहयोगी बनती है और उसके लिए उन्होने अपने जीवन को तपाया था। अपनी साधना से आत्म बल को बढ़ाया भी तभी समाज सेवा का इतना बड़ा कार्य सम्भव कर सकें। आपका दिल्ली सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध था। दिल्ली के सम्मेलनों में साक्षात अनुभव किया है कि आप के फोन पर ही सहजभाव से परिवारिक व्यक्ति की तरह वार्ता कर लेते थे और उसे साकार भी करते थे। जब आर्यवीर महासम्मेलन में तूफान से सारा कार्यक्रम स्थल क्षतिग्रस्त हो गया था तभी उन्होने स्वयं आकर स्थल का निरीक्षण किया और सभी आर्य अतिथियों की आवास एवं भोजन की व्यवस्था की थी। बीच बीच में फोन पर वार्ता होते हुए देखा भी कुशलता लेते रहे दिल्ली के आर्य महासम्मेलन में भी उनका पूरा सहयोग प्राप्त किया था यह सब चमत्कार देश विदेश में भी अनुभव किया जा सकता है। अतः उनका स्वाध्याय, प्रवचन एवं व्यवहार यह सिद्ध करता है कि उन्होने महर्षि पतंजलि के सूत्र को जीवन में साक्षात् किया कि चतुर्भि प्रकारै विद्या उपयुक्ता भवति-आगम कालेन स्वाध्याय कालेन प्रवचन कालेन व्यवहार कालेनेति...। आर्यवीर दल के प्रान्तीय सम्मेलनों में भी हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, अवश्य जाते थे। मेरठ के सम्मेलन में आप का स्वास्थ्य ठीक नही था। फिर भी आये और आर्यवीरों को उत्साहित किया। सार्वदेशिक आर्यवीर शिविरों में भी आप प्रसन्नता से जाते थे।

●●●

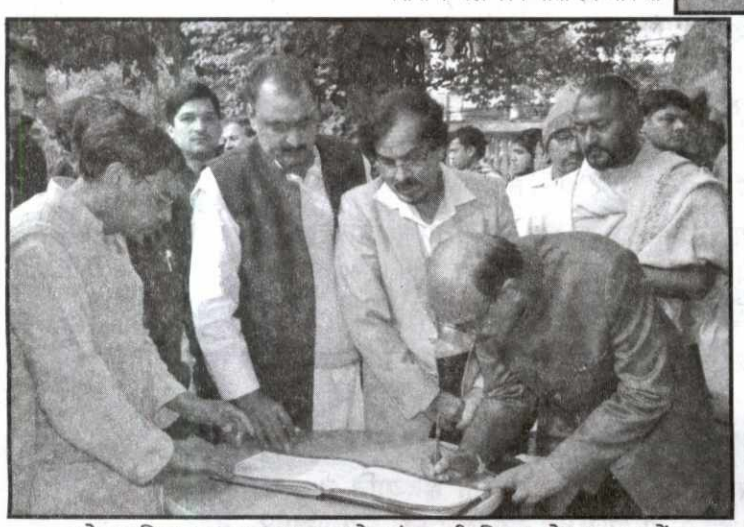

शोक पुस्तिका पर हस्ताक्षर करते सांसद श्री विजय गोयल साथ में श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

ब्रह्मचारी जी को श्रद्धांजलि सुमन प्रस्तुत करते महाशय धर्मपाल(एम.डी.एच.) व अन्य

शवयात्रा

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

नारी जागे अपने को पहचाने और अपने स्वत्व की रक्षार्थ आगे बढ़े

आजकल प्रायः समाचार पत्रों में छोटी बच्चियों से लेकर अधेड़ महिलाओं के साथ बलात्कार सामूहिक बलात्कार फिर उनकी हत्यायें की जाने की रिपोर्ट छपती है। रिपोर्ट पुलिस में लिखी है, 2-4 दिन उसकी सरगर्मी से जांच की सूचनायें अखबारों में पढ़ने को मिलती हैं फिर शान्ति हो जाती है। कोई बलात्कारी हत्यारा पकड़ में नहीं आता। पहले ऐसी घटनायें शायद ही कभी सुनने को मिलती हो। इसके मूल में ऊपर से नीचे तक सभी की विदेशी मानसिकता है जिसमें किसी पुरूष का किसी महिला से शारीरिक सम्बन्ध करना निन्दनीय नहीं है। हमारे देश के न्यायालय ने भी 'लिव एण्ड रिलेशनशिप' के नाम पर यह आजादी सभी देशवासियों को दे दी है। फलतः हमारी नई युवा पीढ़ी लड़के और लड़कियां आपस में मोबाइल द्वारा निकटता बढ़ाते मिलते निःसंकोच शारीरिक सम्बन्ध बनाते दोनों एक दूसरे के जीवन के साथी बनने के सपने संजोते। विवाह करने का वायदा करते परन्तु जब लड़का अन्य लड़कियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करता तो दोनों में विवाद होता और अन्ततः उसकी परिणति हत्या के रूप में होती है, कुछ मनचले इसी प्रकार सड़क पर चलती महिलाओं के साथ छेड़खानी करते जबर्दस्ती बलात्कार करके उनकी हत्यायें करते हैं। कुछ हबशी आवारा छोटी बालिकाओं और अधेड़ महिलाओं से इसी प्रकार जबर्दस्ती बलात्कार करते व उनकी हत्यायें कर देते हैं। परन्तु आजतक शायद ही कोई दुष्कर्मी पकड़ा गया हो। कारण यह सभी आवारा लड़के रईसों की सन्तानें हैं जिनकी पैठ तमाम राजनेताओं में भी है। यह इसलिए पकड़े नहीं जाते, मामले धीरे-धीरे शांत हो जाते हैं। सरकार को बड़ी ही गम्भीरता से इसपर विचार करके ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके सभी अपराधी पकड़े जायें और उनको इसके लिए कठिन से कठिन सजा बिना विलम्ब के देने की व्यवस्था करे।

ऐसे अपराधों में बेटियां गहराई से सोचें कि वे अपना रहन सहन, परिधान उन्मुक्त न बनाकर शालीन बनायें। कक्षा में बालक-बालिकाओं की मित्रता शिक्षा में एक दूसरे से आगे बढ़ने की हो भोगवादी जीवन जीने की नहीं। बेटियां अपने पूर्व इतिहास को पढ़ें, नारी के गौरव को जाने। वर्ष में दो बार नवरात्रि के नौ-नौ दिन तक अधिकांश महिलाएं व्रत रखती हैं और उसमें कथा के रूप में माता के नौ रूपों की कथा होती है जिसमें जहां प्यार और दुलार से सन्तान निर्माण तो रणचण्डी बनकर दुष्टों के दलन की भी कथा होती है। नारियां श्रद्धापूर्वक उन कथाओं को सुनकर समझ कर अपने जीवन निर्माण का व्रत लें। पूर्व इतिहास में जहां गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी शास्त्रार्थ में आदि शंकराचार्य को हराने वाली मण्डन मिश्र की पत्नी भारती जैसी विदुषी होती थी वही युद्ध क्षेत्र में जमकर संघर्ष करने वाली महारानी कैकेयी जैसी योद्धा पूर्व काल में हो चुकी हैं, वहीं १८५७ में देश की रक्षार्थ अपना बलिदान देने वाली महारानी लक्ष्मी बाई, झलकारी बाई, ऊदा देवी जैसी वीरांगनायें, महात्मा गांधी द्वारा प्रारम्भ आजादी के लिए सत्याग्रह आन्दोलन में पं. जवाहर लाल नेहरू को उतारने वाली उनकी धर्मपत्नी कमला नेहरू बनीं (इलाहाबाद में स्वतंत्रता सेनानियों के जलूस का नेतृत्व करते हुये आनन्द भवन से जब नेहरू जी ने अपनी पत्नी कमला नेहरू को देखा तो उनके अन्दर आजादी की ऊर्जा पनपी और उसी जुलूस में दौड़ कर भाग लेकर देश की आजादी पाने की ललक को अन्ततः पूरा किया)। सरोजनी नायडू भी उसी युग की योद्धा रहीं और देश को स्वतंत्र कराने में सफलता प्राप्त की।

हमारी मातायें, बहनें, बेटियां अपने उस उज्ज्वल मातृ शक्ति के स्वरूप को गहराई से पढ़ें और जीवन में अपनायें। फिर वे अबला और पीड़िता न हो सकेंगी। पढ़ाई के समय केवल शिक्षा प्राप्ति में मगन रहे अपनी ब्रह्मचर्य साधना से सबल और निर्भीक बनें अपने चेहरे पर ब्रह्मचर्य की आभा बढ़ायें, दुष्ट उसपर निगाह डालने की हिम्मत ही न कर सकेंगे यदि कोई ऐसा दुस्साहस करने का यत्न करे तो उसे उचित दण्ड देने की शक्ति का प्रयोग करे। निश्चय ही यदि नारी जाति ने अपनी पूर्वज माताओं की इस गौरव गाथा को पूरी तरह अपने जीवन में संजो लिया तो कोई भी दुष्ट आगे बढ़ने का दुस्साहस न कर सकेगा। सभी मातायें , बहने, बेटियां सुरक्षित होंगी। भारत के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अपना अनुपमेय योगदान देकर भारत माता के गौरव को सारे विश्व में संस्थापित करने में समर्थ बनेगी।

-सम्पादक

पर्यावरण और वेद

विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा, शास्त्री

वेद एक है। पर्यावरण प्रदूषण अनेक हैं और वह भी वैश्विक पर्यावरण प्रदूषण।

अभिधार्थ से सिद्ध है कि वेद विश्व का ज्ञान केन्द्र है। विश्व की परम औषधि है। विश्व का परम उपचार है। वेद विश्वाधार प्रभु का महाकाव्य है, जिसे पाकर मानव का हृदय खिल उठता है। गर्व से रोता हुआ मानव हंसने लगता है। इसे पाकर मानव अभय हो जाता है। इसे पाकर मानव में कवित्व जाग जाता है। उसमें साहस का संचार हो जाता है। उसकी शिराओं में राष्ट्रीयता बहने लगती है। उसी की दया से मानव याज्ञिक बनता है। उसमें अध्यात्म ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। उसी से वह भौतिक वसुन्धरा की आराधना में डूबता और अध्यात्म ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। उसी से वह भौतिक बसुन्धरा की अगाधता में डूबता और उतराता है। इसे पाकर ही मानव वैज्ञानिकता के बहुआयामी श्रृंगार सजाता है। खगोल वेत्ता हो जाता है और भूगोल विजेता बन पृथ्वी का सम्राट कहाता है। फिर विश्व का पर्यावरित प्रदूषण वैदिक यज्ञ के आगे टिकेगा कहां? उसे तो घुटनों के बल चलना पड़ेगा।

सृष्टि के जर्रे जर्रे में व्याप्त वेद-ज्ञान उसी परमेश प्रभु का दिव्य भण्डार है। जिसके सामने प्रदूषण की आंखे चुंधिया जाती है। देव की यज्ञ पद्धति पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त करने की ऐसी अभेघ वैज्ञानिक प्रयोगशाला है जिस पर बैठा विश्वमानव सुख शान्ति की सांस लेकर दीर्घायु प्राप्त करता है तथा अमन चैन की सुमधुर बंशी बजाता रहता है।

वह प्रदूषण चाहे आणविक प्रदूषण हो चाहे जलीय प्रदूषण हो चाहे धूम्र प्रदूषण हो, चाहे रासायनिक प्रदूषण हो, चाहे धूलि प्रदूषण हो, चाहे ध्वनि प्रदूषण हो, चाहे वह वैचारिक प्रदूष्ज्ञण हो, वेद प्रतिपादित यज्ञवेदि इन सब प्रदूषणों की ऐसी असाधारण वैज्ञानिक शिखा शाला है जिसकी ऊर्जा के सामने सभी प्रदूषण मधुमय सुगन्ध में बदल जाते हैं। समस्त ब्रह्माण्ड हविष्टमान हो जाता है, उसके रक्षा कवच (ओजोन परत) को सूर्य की पैराबैंगनी किरणें हानि नहीं पहुँचा पातीं। वरन् शक्ति प्रदान करती हैं।

ग्लोबल वार्मिंग का जनक अमेरिका है। इसने पर्यावरण को इस कदर दूषित कर दिया है कि यह दुनिया के लिए खतरा बन गया है।

दुनिया के सारे देश कुल मिलाकर २७ अरब टन गैसों का उत्सर्जन करते हैं। इसमें अकेले अमेरिका ६ अरब टन, चीन पांच हजार टन, भारत १ अरब टन गैसों का उत्सर्जन करता है (२८ दिस. २०१३ अमर उजाला, पृष्ठ-१४)। जिस प्रदूषण का उपचार-उपाय वेद की यज्ञ पद्धति ही है। कोई अन्य सारगर्भित दूसरा उपाय नहीं हैं।

वैचारिक प्रदूषण में इस्लामिक आतंकवाद प्रदूषण अपने ही देश के होनहार १६० बच्चों को अपनी ही क्रूर बर्बरता के साथ मरते और मारते हुए देख रहा है। इस वैचारिक बर्बर प्रदूषण नग्नता को इस्लाम के अलावा कोई भी विश्व धर्म स्वीकार नहीं करता। यह इसी बीते कल दिसम्बर २०१४ पाकिस्तानी इस्लाम का वैचारिक कुफ्र है जो शिक्षा जगत् में आगे बढ़ते अपने ही फूल से खिलते कोमल प्यारे बच्चों को भी देख नहीं सका।

जगत् में पर्यावरित प्रदूषण की एकमात्र औषध यज्ञ की सुगन्धित वायु को फैलाने वाले केवल निम्नलिखित चार वेद मंत्रें के गीत गाते हुये यज्ञ का विश्व में प्रचार और प्रसार होना चाहिएः-

''विश्व में शान्ति सुख का जल बहता रहेगा।''

''संगठन सूक्त''

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषत्रग्ने विश्वान्यर्मआभुव
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसूव्याभर।। ऋग्वेद १०-१६१-१

हे प्रभों! इस लोक में वेद ध्वनि से धन की वर्षा होती रहे।

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।। १०-१६२-२

हम सभी जन प्रेम से पूर्व ऋषि-मुनियों के कर्त्तव्यों का पालन करें।

ओ३म् समानो मंत्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमिं १०-१६१-३

प्रभु! हम सब अविभाजित मन से यज्ञ भोग सामग्री के भोक्ता रहे।

ओ३म् समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। १-१६१-४

हे प्रभो! हम संकल्पित योग व्रत से विश्व की सुख सम्पदा के भागी रहें।

इससे विश्व में वैचारिक पर्यावरण प्रदूषण आदि प्रदूषण समाप्त होकर प्रेम-शान्ति के सुखद वातावरण की नींव गहरी होती रहेगी।

-मालदा बाग, पुरानी गुड़ मण्डी
शाहपुर, जनपदउ-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

hearyasamaj.org

धर्मान्तरण की वास्तविकता

–प्रताप कुमार 'साधक', लखनऊ

गत मास कुछ मुस्लिम और ईसाई स्त्री पुरुषों द्वारा स्वेच्छा से पुनः हिन्दू–मत ग्रहण कर लेना राजनैतिक भूचाल का कारण बन गया। लोकसभा व राज्य सभा में विपक्ष ने सदन की नियमित कार्यवाही नहीं चलने दी तथा समाचार चैनलों पर इसी विषय को लेकर केन्द्र की मोदी सरकार व हिन्दू–संगठनों पर शाब्दिक प्रहार होते रहे। ऐसा लग रहा था मानो देश में कोई अनहोनी घटना हो गई हो या 'धर्म निरपेक्ष' भारत में ईसाइयों–मुसलमानों को समाप्त किया जा रहा हो। जबकि वास्तविकता यह है कि भारत में मतान्तरण तो सदियों से होता आ रहा है। भेद केवल मतान्तरण के लिए अपनाए जाने वाले उपायो का है। इतिहास गवाह है कि हिन्दुओं का मुस्लिम मत में मतान्तरण दबाव और तलवार (शक्ति) के द्वारा किया गया जबकि ईसाई मत के पादरियों ने इसके लिए छल–कपट व लालच का भी सहारा लिया। हिन्दुओं ने तो मतान्तरित हुए हिन्दुओं को भी वापस आने का विरोध ही किया अन्यथा भारत में और विशेषकर बंगाल व कश्मीर में मुस्लिम मतावलम्बियों की इतनी बड़ी संख्या आज न होती। हां, आर्यसमाज ने गत १०० वर्षों में जो 'शुद्धि' का कार्यक्रम चलाया, उसके फलस्वरूप कुछ मतान्तरित व्यक्ति पुनः हिन्दू बन सके। वर्तमान कुछ हिन्दू संगठन इसी को 'घर–वापसी' का नाम देकर स्वेच्छा से पुनः हिन्दू–मत अपनाने वालों को माध्यम उपलब्ध करा रहे हैं, जो भारत के 'धर्म निरपेक्ष' स्वरूप को कहीं से भी बिगाड़ने वाला नहीं कहा जा सकता है। आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि हिन्दुओं को षड़यंत्र द्वारा ईसाई या मुसलमान बनाने पर जिन्हें कोई आपत्ति नहीं है, उन्हीं राजनैतिक हिन्दू नेताओं को अन्य मतों से हिन्दू–मत में समावेशित किए जाने पर घोर आपत्ति है।

दार्शनिक दृष्टि से देखें तो मानव मानव का एक ही धर्म है, जिसे त्याग देने पर वह मनुष्य कहलाने का पात्र नहीं रहता। ऋषियों–मनीषियों ने 'धर्म' को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है, यथा 'यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।' अर्थात – जिन कार्यों से सांसारिक तथा पारलौकिक लक्ष्यों की प्राप्ति होती है, वह धर्म है। धर्म का यह भी लक्षण है कि 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेणां न समाचरेत्' अर्थात् जो अपने को अच्छा न लगे, ऐसा व्यवहार हमें दूसरों के प्रति भी नहीं करना चाहिये। मनुमहाराज ने मनुस्मृति में धर्म के दश लक्षण बतलाए है– 'घृति, क्षमा, दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।' धीर्विधा सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम।' अर्थात् – धैर्य, क्षमा, मनोनिग्रह, पराई वस्तु को हड़पने की इच्छा भी न करना, बाह्य व भीतरी शुद्धि, इन्द्रियों को वश में रखना, बुद्धि, ज्ञान प्राप्ति, सत्य तथा क्रोध न करना – ये दश लक्षण धर्म के हैं। किसी भी देश, मज़हब, पंथ, मत या रूप–रंग वाले स्त्री–पुरुषों के लिए उपरोक्त लक्षण समान रूप से ग्रहणीय है। अहिंसा को परमधर्म कहा गया है– 'अहिंसा परमोधर्मः।' उपरोक्त में से जो भी व्यक्ति जितने अधिक लक्षणों को धारण करेगा, वह उतना ही धार्मिक होगा, भले ही वह अपने को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध, सिख अथवा नास्तिक ही कहता हो। वस्तुतः धर्म सदाचरण का ही दूसरा नाम है। दुराचारी व्यक्ति धार्मिक नहीं होता भले ही वह किसी भी वेश–भूषा में हो। वस्तुतः धर्म तो मनुष्यता की रक्षा करने वाला होता है। इसीलिए कहा गया है – 'धर्मो रक्षति रक्षितः।'

मनुष्य मात्र के लिए धर्म और अधर्म अर्थात् करणीय और त्याज्य कर्मों का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में ही सृष्टि – निर्माता ईश्वर द्वारा विशिष्ट ऋषियों के माध्यम से चार वेदों के रूप में प्रकट कर दिया गया। कालान्तर में उन्हें भली भांति समझने के लिए अन्य ऋषियों द्वारा ब्राह्मण ग्रन्थों उपनिषदों व शास्त्रों आदि की रचना की गई। किन्तु 'मुण्डे मुण्डेमतिर्भिन्निः' के अनुसार कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों ने धर्म के सम्बन्ध में अपने निजी विचार स्वतंत्र मतों के रूप में रखे जिसे उनके अनुयाइयों ने स्वीकार करके अलग धर्म के रूप में प्रचारित और प्रसारित किया। इनमें अधिकांश बातें वेदानुकूल होते हुए भी कुछ बातें वेदों से प्रतिकूल भी थीं। अपने मतावलम्बियों की संख्या बढ़ाने के आग्रह में लालच, छल, प्रपंच और शक्ति का सहारा भी लिया जाने लगा, जो पारस्परिक द्वेष का कारण बना। इस प्रकार विभिन्न मतों के अनुयाइयों की संख्या वैदिक धर्मावलम्बियों से अधिक हो गई और कई देशों में राजनैतिक सत्ता प्राप्त हो जाने से वही मत देशवासियों का धर्म कहलाने लगा। मज़हब सम्प्रदाय, मत, मार्ग, पंथ आदि का ऐसा फैलाव गत चार हज़ार वर्षों में ही सारे विश्व में हुआ है। इसके परिणाम स्वरूप धर्म के वास्तविक स्वरूप का स्थान सामयिक और स्थानिक क्रिया–कलापों ने ले लिया। इससे प्रत्येक मतावलम्बी अपने कर्म–काण्डों को उचित और अन्य को अनुचित समझता है। यही विद्वेष मनुष्यों में घृणा और हिंसा का कारण बनता रहा है। इतिहास साक्षी है कि जितनी हत्याएं धर्म के नाम पर विश्व में हुई है, उतनी किसी अन्य कारण से नहीं। भारत में भी विदेशी शासकों ने तलवार के बल पर भारतीयों (हिन्दुओं) को उनके मतों को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया अथवा छल–प्रपंच द्वारा उनका मतान्तरण (धर्मान्तरण) किया गया। 'हिन्दू' धर्म के ठेकेदारों ने झूठे दम्भ और अज्ञानता के कारण मतान्तरित व्यक्तियों के पुनरागमन के द्वार बन्द रखे। इस प्रकार हिन्दुओं की संख्या निरन्तर कम होती गई।

यद्यपि पाकिस्तान और बांगलादेश से इतर स्वाधीन भारत में बलपूर्वक धर्मान्तरण करवाने की घटनाएं नहीं हो रही हैं, तथापि विदेशी पादरियों द्वारा छल तथा धन के बल पर निर्धन, अशिक्षित हिन्दुओं का ईसाईमत में धर्मान्तरण निरन्तर चालू है, जिसके लिए वेतनभोगी पादरियों तथा प्रचुर धन की व्यवस्था विदेशों से हो रही है। सेवाकार्य के बहाने विवशता और धोखे से धर्मान्तरण करने वाले 'मिश्नरियों' को न केवल शासन की ओर से पूरी छूट है, अपितु उन्हें इसके लिए प्रशंसित और पुरूस्कृत भी किया जाता है। यद्यपि उनकी इन कुटिल गतिविधियों की चर्चा समाचार पत्रों ही नहीं संसद में भी समय–समय पर होती रही है, तथापि इस देश के सत्ता–लोलुप राजनेताओं द्वारा उनकी अनदेखी होती रही। सर्वप्रथम मध्य प्रदेश सरकार ने डा० भवानीशंकर नियोगी की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति विदेशी मिश्नरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों की जांच के लिए १४ अप्रैल १९५६ ई० को गठित की थी, जिसकी रिपोर्ट चौकाने वाली है। उसी के आधार पर मध्यप्रदेश में छल–कपट, लालच या बल से धर्मान्तरण करने कराने को दण्डनीय अपराध घोषित किया गया है। ऐसी ही व्यवस्था पूरे भारत में लागू करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा कानून बनाने की आवश्यकता थी। इसके लिए जनता–सरकार के दौरान सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली के महामंत्री श्री ओमप्रकाश त्यागी, संसद, सदस्य ने संसद में 'केन्द्रीय धर्म स्वातन्त्र्य बिल १९७८' का मसौदा प्रस्तुत किया। जिसके विरोध में ईसाई–समुदाय ने पूरे देश में आन्दोलन प्रारम्भ करा दिया। यद्यपि उक्त बिल में किसी धर्म (मत) का नाम तक नहीं था, तो भी ईसाई पादरियों ने इसे ईसाइयों द्वारा किए जा रहे धर्म प्रचार और धर्मान्तरण में बाधक बतलाते हुए धार्मिक स्वतन्त्रता को समाप्त करने वाला प्रचारित किया।

आर्य समाज ने ईसाइयों द्वारा फैलाए जा रहे भ्रम के निवारण हेतु अन्य हिन्दू, सिख, जैन संगठनों के सहयोग से त्यागी–बिल' की वास्तविकता और आवश्यकता जनता को बतलाने का कार्य प्रारम्भ किया। उसी के अन्तर्गत लखनऊ में प्रसिद्ध समाजसेवी श्री तेज नारायण एडवोकेट की अध्यक्षता में 'धर्म स्वातन्त्रय विधेयक जन–जागरण समिति' का गठन हुआ, जिसकी ओर से मेरे द्वारा लिखित ट्रैक 'भारत में ईसाई मिश्नरियों की गतिविधियाँ और त्यागी बिल की आवश्यकता' का प्रकाशन १९७९ में कराके देश के समस्त सांसदों एवं प्रमुख जनों को भेजा गया तथा लखनऊ में एक विराट सभा का आयोजक किया जिसमें स्वयं श्री ओमप्रकाश त्यागी ने मिश्नरियों की गतिविधियों और उक्त बिल की आवश्यकता विस्तृत रूप से बतलाई। खेद है मोरार जी सरकार के समय से पूर्व गिर जाने से ऐसा कोई विधेयक पारित न हो सका।

आजकल हिन्दू संगठनों द्वारा किए जाने वाले धर्मान्तरण की बहुत चर्चा है जबकि इनमें स्वेच्छा से सम्मिलित होने वाले स्वयं यज्ञ करते हुए दिखलाए गए है। ऐसा लगता है कि स्वाधीन भारत में केवल बहुसंख्यक हिन्दुओं को ही धर्मप्रचार व प्रसार करने की स्वतंत्रता नहीं है। यदि विपक्षी राजनैतिक पार्टियों के नेताओं को लालच, दल या बल से किए जाने वाले धर्मान्तरण पर आपत्ति हो तो 'त्यागी बिल' जैसा विधेयक पारित करने की मांग क्यों नहीं करते क्या उनके द्वारा दिखलाया जाने वाला हिन्दू विरोध ही उन्हें सत्ता पर बिठला देगा ?

–एम–३३१, आशियाना, कानपुर रोड
लखनऊ

गरीबी - गद्यगीत

गरीबी में सत्य छिपा है, शील छिपा है
कला छिपी, कौशल छिपा है।
कर्म छिपा और धर्म छिपा है,
श्रद्धा छिपी सम्भूति-पारावार छिपा है।
चरित्र छिपा, कल्याण छिपा है,
संस्कार छिपा-आभामय संचार छिपा है।
पुरुषार्थ छिपा-ऊषा का संदेश छिपा है,
ऊर्जा छिपी, उपकार छिपा, पीड़ा दर्द तमाम छिपा है।
यातना छिपी-संदेह छिपा, स्वाभिमान का मूल छिपा है,
भूख छिपी और प्यास छिपी है-करूणामय सन्ताप छिपा है।
तप छिपा है-त्याग छिपा है,
साधु सभ्य-संवाद छिपा है।
धैर्य छिपा है - शान्ति छिपी है,
अनुभूति छिपी है - ज्ञान छिपा है।
सन्ध्या छिपी - सन्तोष छिपा है,
सहनशील - मृदु भाव छिपा है
मौन छिपा-सुनसान छिपा है,
अधिमान छिपा - श्रृंगार छिपा है
कलरव-उड़ान-विहान छिपा है।

सारः- गरीबों की झोंपड़ी में ईश्वर का निवास है। उनकी सेवा से ही मुक्ति द्वार के दर्शन होते हैं। ईश्वर के सनातन ज्ञान वेद का यही निष्कर्ष है। यही ईश्वर का सत्य स्वरूप है। गाओ तो इसी के गीत गाओ- मुक्ति सुख का आनन्द मिलेगा, साम्राज्य मिलेगा।

विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा 'शास्त्री'
मालदाबाग, शाहपुर
मुजफ्फर नगर (उ0प्र0)

सुभाष जयन्ती एवं गणतंत्र दिवस पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

देश की स्वाधीनता के लिए आत्म बलिदानी नेता श्री सुभाष चन्द्र बोस के 119वीं जयन्ती दिनांक 23 जनवरी को एवं भारत को 26 जनवरी, 1950 को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति के 65वें वर्षारम्भ पर सभी देश वासियों को शतशः शुभकामनाएँ।

हम सभी भारतवासी अपने जीवन को देश की सुख समृद्धि से पूर्ण बनाने के लिए मनसा वाचा कर्मणा समर्पित करने का व्रत लें और देश को सर्वोन्नत बनाने के लिए कृत संकल्प हों।

–देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

thearyasamaj.org

''अग्निहोत्र-एक देव यज्ञ'' लेख पर तार्किक विचार

-वेद प्रकाश गुप्ता

नोट-विद्वान् लेखक ने मेरी काफी चर्चा के बाद धुयें के स्थान पर वाष्प शब्द स्वीकार कर लिया। परन्तु प्रचण्ड अग्नि से ही वाष्प तैयार होती है जो वायुमण्डल का शोधन करती है प्रचण्ड अग्नि के बाद कोयला बनने पर उसकी वह वाष्पन शक्ति नहीं बनती अतः प्रचण्ड अग्नि में ही आहुतियां डाली जायें ऐसा मेरा मन्तव्य है विद्वान लेखक इस लेखपर पुनः अपने विचार भेजें उनका हम प्रकाशन आर्यमित्र में सर्वजनहिताय अवश्य करेंगे - सम्पादक

आर्य मित्र पत्रिका वर्ष 116 अंक 29-30 दिनांक 05 एवं 12 अगस्त के अंक में उपरोक्त लेख प्रकाशित हुआ है। यह लेख प्रशंसनीय है। इस लेख के कुछ बिदुंओं पर मेरा विचार, सुझाव प्रस्तुत है।

बिंदु 1- सर्वथा उचित है।

बिंदु 2 - इस बिदुं में लिखा है कि घृतादि सुगन्धित तथा औषधियां पदार्थों की अग्नि में आहुति देकर वातावरण को शुद्ध करना। यह सत्य नही है। प्रचलित यज्ञ विधि के ''लौयुक्त अग्नि'' में आहुति देकर वातावरण को पूर्ण रूप से सुगन्धित व शुद्ध नही किया जा सकता है बल्कि आंशिक रूप से किया जा सकता है। यज्ञ प्रक्रिया एवं यज्ञ महिमा पर कई पुस्तकें है, परन्तु मेरे ज्ञान में वैज्ञानिक आधार पर दो पुस्तकें हैं। रसायनशास्त्री डा0 राम प्रकाश द्वारा लिखित पुस्तक ''यज्ञ विमर्श'' तथा डा0 स्व0 स्वामी सत्य प्रकाश द्वारा लिखित पुस्तक "Chemistry in Yojna" में ''लौयुक्त यज्ञ'' के बारे में ही लिखा है। इन पुस्तकों में लिखे विवरणों के अनुसार एवं शांति कुंज हरिद्वार आदि द्वारा कराये गये शोधों के अनुसार ''लौयुक्त यज्ञ'' से जो जो रसायनें हवा में फैलती हैं, उनमें एक को छोड़कर सभी हानिकारक व जहरीली हैं एवं उनमें आवश्यक सुगंधित, पुष्टिकारक, मीठी तथा नासिका से ग्रहण करने योग्य रसायनें बिलकुल भी नही हैं। ''लौयुक्त अग्नि'' से कौन-कौन से रसायनें कितने मात्रा में उत्पन्न होते हैं, का अनुमान करना कठिन है। इन्हीं दोनों पुस्तकों में यज्ञ सामग्रियों में विद्यमान उड़नशील रसायनों के नाम व गुण भी लिखे हैं, वह ''वाष्पयुक्त यज्ञ'' से ही वायुरूप में परिवर्तित होकर, हवा में फैलती हैं, जिनमें सुगंधित, पुष्ठकारक, मीठी एवं औषधिये पदार्थ बहुत ज्यादा लाभदायक तथा नासिका से ग्रहण करने योग्य है और यही विधि स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखित वेदों के भाष्य एवं सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 में लिखे लक्ष्य को प्राप्त करने के अनुरूप है।

यज्ञ संबधी उपरोक्त दोनों पुस्तकों में लिखे गये विवरणों के अनुसार देशी घी में 10, कपूर में 8 से अधिक तरह की रसायनें होती हैं व यज्ञ हव्य सामग्रियों में जितनी वनस्पतियाँ आदि डाली जाती हैं, उससे कहीं ज्यादा बल्कि कई गुना लगभग 100 रसायनें, होती हैं, जो ''वाष्पयुक्त यज्ञ'' से वाष्प यानी वायुरूप मे हवा में फैल कर दूर-दूर तक लाखों लोगों को नासिका से ग्रहण होती है। इन दोनों पुस्तकों के अनुसार ''लौयुक्त यज्ञ'' से प्राप्त होने वाली लगभग 32 रसायनों की मात्रायें अनिश्चित होने के साथ, मात्र 1 को छोड़ कर सभी रसायनें नासिका से ग्रहण करने योग्य नही है एवं हानिकारक है। ''वाष्पयुक्त यज्ञ'' में जिन पदार्थों की आहुतियाँ दी जाती है, उन सब में स्थिति समस्त उड़नशील पदार्थ की पूर्ण मात्रायें वाष्प बन कर हवा में फैलती हैं जिनमें मूल सामग्रियों के समस्त गुण पूर्ण रूप में रहती है तथा विघटित होकर कुछ भी नष्ट नही होती हैं। इन सब की समस्त गुणों जैसे रोगाणुनाशक, एंटीसेप्टिक, दर्दनाशक, रक्तस्राव रोकने वाला, सूजननाशक, कपकनाशक antifungal, मरोड़नाशक, कपकनाशक, दिमाग को शांत करने वाला आदि के समस्त लाभ व मात्रांए, लौयुक्त यज्ञ की अपेक्षा कई कई गुना ज्यादा है। यज्ञ पर उपलब्ध दोनों पुस्तकों एवं हुए शोधों से यही सिद्ध होता है कि ''लौयुक्त यज्ञ'' में मूल रसायनें उच्च तापमान पर हवा के आक्सीजन गैस के साथ रसायनिक क्रिया करके, विघटित होकर अन्य रसायनों में परिवर्तित होकर, मुख्यतयाः रंगहीन, गंधहीन कार्बन डाइआक्साइड गैस व कुछ अन्य गैसे जो हानिकारक हैं, कुछ पानी भाप के रूप में तथा काफी ताप यानी गर्मी ही हवा में फैलती है।

सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास-3 में एक प्रश्न के उत्तर में स्वामी दयानंद जी ने लिखा है '' इतने ही से समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके फैल के, वायु के साथ दूर देश में जाकर, दुर्गन्ध की निवृत करता है।'' मेरा आर्य समाज के समस्त पाठकों विशेषकर जिन्होंने इंटर, बीएससी तक विज्ञान की पढ़ाई की हो, से विनम्र निवेदन है कि वह विचार करें कि किसी भी तरल एवं उड़नशील पदार्थ एवं यज्ञ में डाले गये पदार्थों को सूक्ष्मतम कण में यानी वायुरूप में कैसे, किस प्रक्रिया से हवा में फैलाया जा सकता है। पदार्थ को ''लौयुक्त अग्नि'' में लौ के साथ जलाकर अथवा पदार्थ को ''लौरहित कोयले या कंडे की अग्नि'' में डाल कर गर्म कर वाष्प में परिवर्तित कर। किसी भी पदार्थ का गंध, स्वाद एवं रसायनिक गुण समान रहते हैं, चाहे वह ठोस या तरल या गैस यानी वायुरूप यानी वाष्प यानी सूक्ष्मतम कण में हो, यानी उनके लाभ हानि समान होगें। सामान्य वातावरण के तापमान पर जो पदार्थ तरल रूप में रहते हैं, उन्हें ठंडा करने पर ठोस रूप में बदला जा सकता है और गर्म करके सूक्ष्मतम कण यानी वायुरूप यानी वाष्प में बदला जा सकता है। पानी गर्म करने पर उबलने लगता है और साथ ही भाप, वाष्प बन कर वायु यानी हवा में फैलने लगता है। इसी प्रकार पानी शून्य यानी 0 डिग्री से सेंटीग्रेड 100 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच तरल अवस्था में रहता है, 0 डिग्री सेंटीग्रेड से कम पर ठोस बर्फ तथा 100 डिग्री सेंटीग्रेड से ऊपर तापमान पर वाष्प यानी भाप, गैस अवस्था में रहता है। इसी प्रकार देशी घी लगभग 25 डिग्री सेंटीग्रेड से लगभग 160 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच तरल अवस्था में रहता है, 25 डिग्री सेंटीग्रेड से कम पर ठोस अवस्था तथा 160 डिग्री सेंटीग्रेड से ऊपर वाष्प अवस्था में रहता है और वायुमंडल हवा में फैलने लगता है। एक लीटर पानी को उबालने से 550 लीटर वाष्प यानी भाप बनता है। एक लीटर देशी घी से 1700 लीटर वाष्प बनेगा जो लाखों लीटर हवा को शुद्ध एवं सुगंधित करेगा।

जब किसी भी सामग्री अथवा यज्ञ के आहुतियों को लाल आग यानी कोयले की प्रज्वलित दधकती आग में यानी ''लौरहित अग्नि'' में यानी बगैर लौ के अग्नि में डाली जाती है, तब उस सामग्री में मौजूद तेल, उड़नशील पदार्थ गर्म होते ही, वाष्प के रूप में मूल गुणों के साथ हवा में उड़कर फैलने लगते हैं तथा इसके बाद ही, बचा हुआ पदार्थ यानी कोयला यानी कार्बन तत्व बगैर लौ के आग की तरह जलता है। लेखक ने लिखा है कि इस तरह के यज्ञ में कार्बनडाइआक्साइड गैस नही बनती है जो ठीक नही है। इस तरह के या से भी ''लौयुक्त यज्ञ'' की अपेक्षा एक तिहाई कार्बनडाइआक्साइड गैस बनती है। इसका विवरण नीचे बिदुं 3 में अंकित मेरे लेखों में विस्तार से लिखा है। जब कोई भी सामग्री अथवा यज्ञ के आहुतियों को ''लौयुक्त अग्नि'' में लौ के साथ जलती है, तब उस सामग्री के समस्त पदार्थ के तैलीय यानी उड़नशील पदार्थ भी लौ के साथ जलते हैं यानी इस ज्वलन प्रक्रिया में ज्वलनशील सामग्री के समस्त पदार्थ भी वायुरूप में बदलते ही, हवा में फैलने के पहले ही उच्चतापमान पर पहुंचने के कारण, ज्वलन तापमान तक गर्म होते ही, वायुमंडल के हवा के घटक आक्सीजन के साथ रसायनिक क्रिया कर यानी ''विघटित'' होकर मुख्यतः कार्बनडाइआक्साइड गैस एवं अन्य गैसें अनिश्चित मात्रा में बनाते हैं, जिससे वायुमंडल दूषित होता हैं तथा बहुत ज्यादा ताप गर्मी यानी आग पैदा होती है। इसी कारण जब लकड़ी, कोयला, समस्त तेल घी, हवन सामग्री, घरेलू गैस सिलेडंर की गैस आदि जलता है तब बहुत ज्यादा उर्जा यानी गर्मी ताप तथा कार्बनडाइआक्साइड पैदा होता है जो वायुमंडल को प्रदूषित करता है तथा इसमें कोई सुगंधित पदार्थ नही होती है जिसे यज्ञ पर वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गये पुस्तकों से सत्यापित किया जा सकता है। इससे ''लौयुक्त अग्नि'' एवं ''लौरहित अग्नि'' में किसी भी पदार्थ एवं यज्ञ के हव्य वे देशी घी के जलाने से मिलने वाले संभावित लाभ हानि के अंतर की कल्पना, अनुमान लगाया जा सकता है।

इसे स्वयं करने के लिये एक सूखी लालमिर्च को चिमटी आदि से पकड़ कर, लौ के साथ जल रही अग्नि या घर में जलते गैस के लौ यानी ''लौयुक्त अग्नि'' में ले जाकर लौ के साथ जलायें। आप को मिर्च की तीक्ष्णता न के बराबर लगेगी। अब ऐसा ही एक लाल मिर्च को ''लौरहित अग्नि'' में डाल कर बगैर लौ के साथ जलायें यानी सुलगायें या तवा आदि पर भूने जाने पर इसके रसायन गर्म होकर वाष्प बनकर सूक्ष्मतम कणों यानी करोड़ों अरबों अणुओं में अलग-अलग होकर हवा में फैलने से हजारों लोगों को इसकी तीक्ष्णता तीखापन लगेगा। आर्यसमाजियों द्वारा यज्ञ के लाभ के लिये प्रायः इसी लाल मिर्च का उदाहरण दिया जाता है और डा0 राम प्रकाश जी के पुस्तक में भी लिखा है। मात्र इसी के आधार पर निर्णय लिया जा सकता है कि ''लौरहित अग्नि यानी कोयले की अग्नि या कंडे की अग्नि'' में किया गया यज्ञ, ''लौयुक्त अग्नि'' में किये गये यज्ञ से हजारों गुना ज्यादा लाभकारी है यानी इसमें हव्य की बहुत कम मात्रा की आवश्यकता होगी।

बिंदु 3- जैसा कि लेख में लिखा है, आहुति में प्रयुक्त पदार्थ सूक्ष्म होकर आदित्य लोक को प्राप्त होते हैं जिनसे वर्षा होती है। यह दोनों बातें सत्य नहीं हैं। लेखक ने कोई वैज्ञानिक, व्यवहारिक, वास्तिविक आधार नहीं लिखा है। पाठकों से निवेदन है कि मेरा एक लेख ''यज्ञ कैसे हानिकारक न हो'' पत्रिका ''आर्यमित्र'' के दिनांक 27-11-2011 से 18-12-2011 के अंकों में छपा था जिसमें वाष्पयुक्त यज्ञ ही रसायन शास्त्र विज्ञान के आधार पर लाभकारी होना लिखा था, का भी संदर्भ लेने का कट करें। यज्ञ पर विज्ञान के आधार पर लिखे पुस्तकों के अनुसार आहुति किये गये अधिकांश पदार्थों के हवा के घटक आक्सीजन के साथ रसायनिक क्रिया कर ''विघटित'' होकर मुख्यतः कार्बनडाइआक्साइड गैस

शेष पृष्ठ.....5

thearyasamaj.org

पृष्ठ.....4 का शेष

ही बनती है जो सुगंधित नही होती है तथा इससे वर्षा होना संभव नही है। लेखक ने भी इसी बिंदु में आगे लिखा है कि लौयुक्त यज्ञ से कार्बनडाइआक्साइड गैस बनती है जो वायुमंडल को प्रदूशित करता है।

स्वामी दयानंद द्वारा लिखित ऋग्वेद भाष्य में वेद मंत्र "एतन्यग्ने नवतिन वत्वे आहुताः" ऋग्वेद १०/६८/१०। का अर्थ लिखा है "इस अग्नि में किये जाने वाले यज्ञ में रथों पर लदे प्रचुर मात्रा में धन धान्य ऋत्विजों की दक्षिणा में अर्पित है और हवि के रूप में घी और सामग्री भी अग्नि में अर्पित होती है इससे अग्नि अपनी ज्वालाओं को बढ़ाता है और अंतरिक्ष से वृष्टि को पूरित करता है।" अतः वर्षा कराने के लिये हजारों किलो हव्य एवं घृत से यज्ञ करना होगा तथा जिसकी लागत लाखों में होगी। इसके लिये भी वायुमंडल में पर्याप्त नमी पहले से होना चाहिये। वाष्पयुक्त यज्ञ से निकलने वाली धुँआ को भी हिन्दी अंग्रेजी शब्द कोष के अनुसार ज्वाला कहते हैं इसे केवल लौ के साथ जलाना न माना जाय। हिन्दी अंग्रेजी शब्द कोष के अनुसार अंतिरिक्ष का अर्थ आकाश और वायुमंडल भी होता है। जैसे-जैसे घी व समिधाओं की आहुतियां दी जाती हैं वैसे यज्ञ का वाष्प काफी दूर, काफी ऊपर तक फैल जायेगा और अंतरिक्ष यानी आकाश बादलों तक पहुँचकर वर्षा करा सकता है। इस बृहद यज्ञ से हव्य घृत के वाष्प हवा के नमी को हटा कर स्वयं हवा में ग्रहित हो जाती है और नमी निकल कर पानी की बूदें बनकर वर्षा हो जाती है। इसी सिद्धातं से वर्षा होती है। यहां यज्ञ के अवसर पर अंतरिक्ष का अर्थ अन्य ग्रहादि नही लेना चाहिये। स्थूल चीजें यानी सामग्रियों व यज्ञ से निकलने वाली लपटें, वायु, गैसें आदि के अणु परमाणु भी अन्य ग्रहों परलोक आदि को नही जा सकती हैं क्योंकि पृथ्वी के चारों ओर 4-5 किलोमीटर तक की ऊँचाई तक ही हवा वायुमंडल है, बाकी उसके ऊपर शून्य यानी कोई भी भौतिक पदार्थ नही जा सकती है। इसके ऊपर केवल प्रकाश की किरणें सूर्य आदि ग्रहों आदि को जा सकती हैं।

मुंडकोपनिषद के श्लोक काली कराली .....सप्त जिह्वाः।। मुण्ड0 २/४ की हिन्दी भाष्य के तीन पुस्तकों में अलग-अलग भिन्न अर्थ लिखे हैं जो नीचे लिखा है। अन्य पुस्तकों में अन्य भिन्न-भिन्न अर्थ होगें। एक पुस्तक के अनुसार "जिस समय अग्नि इन सात दशाओं में अर्थात वेग से जल रही हो उस समय होम करना चाहिए। एक ओर काला धूम्र निकल रहा हो। दूसरे देखने से भयंकर मालूम हो। रक्तवर्ण लाटें निकल रही हों। चारों ओर धूम्र फैलने से आकाश धूम्र वर्ण बना रहे और चिनगारियाँ छोटी-छोटी उठ रही हों। और प्रत्येक वर्ण की प्रकाशकर्त्री अग्नि देवी प्रकाश कर रही हो, यह सात दशा हैं, जिस समय अग्नि में होम करना चाहिये। आशय यह है कि बुझी हुई अग्नि में अग्निहोत्र करना ठीक नही, किन्तु अच्छी जलती हुई अग्नि में होम करना चाहिये।

द्वितीय श्री विद्यारत्न जी द्वारा लिखित हिन्दी भाष्य में इस श्लोक का अर्थ लिखा है "लपटें मारती हुई यज्ञाग्नि रूपी" देवी की सात जिह्वाएं हैं, 'काली' 'कराली', मन के समान वेग से उठने वाली 'मनोजवा', रक्तवर्ण वाली 'सुलोहिता', धूम्रयुक्त 'सुधूम्रवर्णा', चिनगारियों वाली 'स्फुलिंगिनी', भिन्न - भिन्न रूपोंवाली 'विश्वरूची'।

तृतीय महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस श्लोक का अर्थ लिखा है 'अग्नि की ज्वालायें' जो या के लिये प्रज्ज्वलित की जाती है। इन्हीं सात रूपों में से किसी न किसी रूप में हुआ करती हैं।" यह सोचने शोधने की बात है कि इन तीनो में केवल एक ही सत्य उचित, सर्वलाभकारी हो सकता है। हमें महात्मा नारायण स्वामी जी ही द्वारा लिखा अर्थ लेना चाहिये क्योंकि इसी से ही यज्ञ सबसे अधिक लाभकारी हो सकता है। एकत्रित वाष्प कणें जब आंखों से दिखाई देती हैं तब यह भी एक प्रकार की ज्वाला होती है।

4 कुछ अतिरिक्त तथ्य - (अ) अब प्रश्न यह उठता है कि यज्ञ की प्रचलित प्रक्रिया से निकलने वाली गैसों से उल्लेखनीय हानि क्यों नही होती हैं तथा थोड़ा सा सुगंध व लाभ कैसे प्राप्त होता है?इसका उत्तर यह है कि यह संभावित रसायने बहुत ही कम मात्रा में बनती हैं जिससे उल्लेखनीय हानि नही होती है। यह भी कारण हो सकता है कि यज्ञ करते समय कई कारणों से यज्ञ अग्नि का लौ बार-बार बुझ जाता है, और उतने समय में देशी घी व यज्ञ सामग्री के रसायनों के लगभग 3 से 10 प्रतिशत भाग गर्म होकर, वाष्प बनकर, उड़ कर हवा में फैलते हैं और सुगंध आदि का आंशिक लाभ मिलता हैं, जिसे हम भ्रांतिवश पूरा लाभ समझते हैं। यदि यह सामग्रियां शतप्रतिशत लौ के साथ जलें तो सुगधं आदि लाभ, नगण्य मिलेगा। यहां यह विशेष उल्लेख करना है कि "लौयुक्त यज्ञ" से जो लाभ लगभग २००–३०० ग्राम देशी घी व सामग्रियों से मूल रसायनों की प्राप्ती होती है, वही लाभ वाष्पयुक्त यज्ञ" के लगभग १०–३० ग्राम देशी घी व सामग्रियों से ही मूल रसांयनों की प्राप्ति होती है, जिसे स्वयं करके अवलोकित हुआ एवं सत्यापित किया जा सकता है।

स्वामी दयानंद जी द्वारा भी किसी वेद मंत्र के हिन्दी भाष्य में यह नही लिखा है कि आहुतियां लौ के साथ जलते हुए अग्नि में डाली जाय। वेदों में यज्ञ का लाभ व लक्ष्य ही लिखा है परन्तु प्रक्रिया चतवबमकनतम नही लिखा है। यजुर्व वेद के मंत्र संख्या 3/4 "उप त्वाग्ने - - - समिधो मम।" का स्वामी दयानंद ने अर्थ लिखा है " मनुष्य लोग जब इस अग्नि में काष्ठ घी आदि पदार्थों की आहुति छोड़ते हैं तब वह उनको अतिसूक्ष्म करके वायु के देशान्तर को प्राप्त कराके दुर्गन्धादि दोषों के निवारण से सब प्राणियों को सुगंध देता है, ऐसा सब मनुष्यों को जानना चाहिए ।।4।।" इसके अनुसार यज्ञ का लक्ष्य वाष्पयुक्त यज्ञ से ही प्राप्त हो सकता है। यज्ञ का पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिये यजुर्व वेद के मंत्र 3/1 "समिधग्नि दुवस्यत ..... हव्या जुहोतन" व मंत्र 3/2 "सुसमिद्धाय शोचिषें .... अग्नयें जातवेंदसे" में समिधा का अर्थ लकड़ियाँ नही लेना चाहिये बल्कि जड़ी बूटियों, औषधिये पदार्थों को लेना चाहिये तथा हव्य में अन्य सुगंधित, पुष्टकारक पदार्थों आदि को लेना चाहिये, जिसे घी से भली प्रकार मिला लिया जाय, जिससे इनका वाष्प तीव्र होकर हवा में फैले, जैसे आर्युवेद में कई जड़ी बूटियों को देशी घी से मिला कर धूनी कर इलाज किया जाता है, जिसे आर्युवेद एवं यज्ञ के पुस्तकों में देखा जा सकता है। यदि वेद में समिधाओं को घृत से शोषित कर एवं घृत की आहुतियां देकर अग्नि को प्रज्वलित करने के लिये कई विशेष मंत्र हैं, तो हव्य आहुति करने के लिये तथा इसे घृत से शोषित करने को इससे भी अत्यधिक विशेष मंत्र होने चाहिये क्योंकि मुख्य मुख्य लाभ हव्य की आहुतियों से ही मिलता है। परन्तु ऐसे मंत्र नही लिखे हुए हैं। अतः समिधा का अर्थ आहुति करने हेतु लाभदायक सामग्रियों का घृत से मिश्रण ही लेना चाहिये। वेद जैसे ईश्वरकृत पुस्तक में मात्र अग्नि को जलाने प्रज्वलित करने के लिये देशी घी, चंदन आदि जैसे अमृत पदार्थ को जला कर व्यय नष्ट करने को, नही लिखा हो सकता है। अन्य कार्यों के लिये जैसे अग्नि को जलाया प्रज्वलित किया जाता है, वैसे ही यज्ञ के लिये भी जला कर उपयुक्त अग्नि तैयार किया जा सकता है, जो देशी घी एवं अन्य सामग्रियों के आहुतियों को गर्म करके वायुरूप यानी वाष्प में परिवर्तित कर हवा में फैला सके। यदि ऐसा नही है तो इन मंत्रों की कार्यवाही, यजुर्व वेद मंत्र संख्या 3/4 "उप त्वाग्ने - - - मम।" के विपरीत, विरोधाभाषी होगा और इसका सुधार किया जाना है। इन मंत्रों तथ्यों व शब्दों का संज्ञान यानी अर्थ सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास-1 के द्वितीय पृष्ठ पर स्वामी दयानंद जी ने लिखा है कि वेद मंत्रों आदि के शब्दों का अर्थ वही लेना चाहिये जो प्रकरण के अनुसार उपयुक्त, लाभकारक हो। इसमें सैन्धव शब्द का उदाहरण भी लिखा हुआ है।

(ब) यज्ञ चिकित्सा पर कई पुस्तकें हैं। समस्त पुस्तकों के अनुसार सामान्य बीमारियों के लिये भी 8-10 दिन सुबह व साम यज्ञ करना चाहिये। इस यज्ञ चिकित्सा के लिये कम से कम 300 ग्राम गाय का देशी घी व इतना ही हवन सामग्री प्रति, एक समय के यज्ञ के लिये आवश्यक है, जिसकी लागत लगभग 600 रूपये प्रति यज्ञ होती है, के अनुसार 10 दिन के प्रातः एवं सायंकाल के लिये लगभग रूपये 12000 आवश्यक होगी। "वाष्पयुक्त यज्ञ" यानी धूनी से चिकित्सकीये लाभ के लिये 'आर्यमित्र' साप्ताहिक पत्रिका दिनांक 17 एवं 24 दिसम्बर 2013 के अंक में श्री कृष्ण आर्य एम.डी.आर.टी. द्वारा लिखे लेख "रोगानुसार हवन धूप" में लिखा है कि अंगारे पर एक चम्मच धूनी सुबह-शाम यानी "वाष्पयुक्त यज्ञ यानी हवन धूप, में मात्र 5 ग्राम यानी एक चम्मच देशी घी व इतना ही हवन सामग्री प्रति एक समय जिसकी लागत लगभग 8-10 रूपये होती है, जबकि उतना ही लाभ रूपये 600 के "लौयुक्त यज्ञ" से प्राप्त होता है। इस लेख में विभिन्न बीमारियों के लिये धूनी दिये जाने वाली सामग्रियों की विवरण भी लिख है।

(स) उपरोक्त विवरणों से यही निष्कर्ष निकलता है कि यज्ञ के लाभदायक विधि के निर्णय के तीनों तरीकों, कसौटियों यानी प्रथम विज्ञान, द्वितीय वेद, शास्त्रों एवं तृतीय प्रत्यछ अनुभूत, प्रयोगों के आधार पर, कोयले या कंडो की अग्नि में आहुति देते हुए "वाष्पयुक्त यज्ञ" ही लाभकारी व यज्ञ के लक्ष्य को प्राप्त करने वाला पुण्य कार्य है, क्योंकि इसी से आहुति की गई मूल सामग्रियां, वाष्प बनकर हजारों गुना शक्तिशाली होकर वायु में फैलती हैं और लाखों लोगों को नासिका से ग्रहण होती हैं जैसा उपरोक्त एक लाल मिर्च का उदाहरण विस्तार से दिया गया है। आर्य समाज के 10 नियमों में से, नियम 4 "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए," तथा नियम 5 "सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य, लाभकारक और हानिकारक होने का विचार करके करना चाहिए" पर "यज्ञ के सत्य असत्य यानी लाभकारक-हानिकारक पर गहन विचार कर, यज्ञ की सही व लाभकारक विधि को अपनाया जाय क्योंकि "सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास -3" के अनुसार गलत विधि से किया गया यज्ञ, पुण्य कर्म नही होगा बल्कि पापमय है। अतः विनम्र हार्दिक निवेदन के साथ अनुरोध है कि इस लेख पर अपनी शंका राय, टिप्पणी अथवा जो कमी गलती लगे उसे, अवश्य ही लिखकर भेजने का कष्ट करें, जिसका मैं उनका उत्तर, निराकरण भेजूगां। यदि मैं गलत सिद्ध होता हूँ, तब मैं क्षमा प्रार्थी हूँगा।

●●●

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में भूमिकाओं की आत्मिक झलक

महाभारत काल के पश्चात महर्षि दयानन्द जी पहले लेखक थे, जिन्होंने प्राचीन ऋषियों की शैली में प्रश्नोत्तर में अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा है

सत्यार्थ प्रकाश में दसवें सम्मुलास तक भूमिका की पृष्टभूमि

पं० उम्मेद सिंह विशारद
वेद प्रचारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं की सम्पूर्ण ग्रन्थ में अपने आत्मीय विचारों का निचोड़ दिया है और हजारों आर्ष ग्रन्थों का प्रमाण दिये हैं। प्रत्येक धर्मशील, कर्मशील, धर्मप्रचारक व आर्य को सत्यार्थ प्रकाश के पठन से पूर्व भूमिकाओं का अवश्य स्वध्याय करना चाहिए। मैंने प्रत्येक भूमिका में वर्णित महर्षि दयानन्द जी के आत्मीय चिन्तन का संक्षिप्त उल्लेख किया है।

महर्षि भूमिका में लिखते हैं, मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य–सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहलाता है।

जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिये विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्या सत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य से झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो। सत्या–सत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नही है।

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर स्वतन्त्र सिद्धांत अर्थात् जो–जो सबके अनुकूल उनका ग्रहण जो एक दूसरे के विरूद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्ते वर्ताएं तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःख सागर में डुबा दिया है।

इनमें जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में घर प्रवृत्त होता है, उसे स्वार्थी लोक विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं। परन्तु सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्थादेवयानः अर्थात् जो सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य से ही विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आवलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते।

नं० १ अनुभूमिका उतरार्थ सत्यार्थ प्रकाश में पुराणादिग्रन्थों के गुण दोष पृष्ठभूमि– जब तक मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत मतान्तर का विरूद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्यों अन्य को आनन्द न होगा। यदि सब मनुष्य और विशेष विद्धवत जन ईर्ष्या द्वेष छोड़कर सत्य–असत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहे, तो हमारे लिये ये बात असाध्य नहीं हैं। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ने ही सब को जाल में फँसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंस कर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहे तो अभी एकमत हो जायें। इसके होने की युक्ति इसके पूर्ति में लिखेंगे। सर्व शक्तिमान परमात्मा एक मत में प्रवृत होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करें।

नं० २ अनुभूमिका उत्तरार्थ सत्यार्थ प्रकाश में बौद्ध जैनियों के मत विषयक पृष्ठभूमि –

जब विद्वान लोगों ने सत्या–सत्य का निश्चय नहीं होता, तभी अविद्वानों को महाअन्धकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद व लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।

यह बौद्ध जैन मत का विषय बिना इनके अन्य मत वालों को अपूर्व लाभ और बौद्ध कराने वाला होगा, क्योंकि ये लोग अपने पुस्तकों को किसी अन्य मत वाले को देखने–पढ़ने व लिखने को नहीं देते। बड़े परिश्रम से मेरे और विशेष आर्य समाज मुम्बई के मंत्री सेठ सेवक लाल कृष्ण दास के पुरुषार्थ से ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं तथा काशीस्थ जैन प्रभाकर यन्त्रालय से छपने और मुम्बई में प्रकरण रत्नाकर ग्रन्थ के छपने से सभी सब लोगों को जैनियों का मत देखना सहज हुआ है।

भला यह किन विद्वानों की बात है कि अपने मत की पुस्तक आप ही देखना और दूसरों को न दिखलाना। इसी से विदित होता है कि इन ग्रन्थों को बनाने वालों को प्रथम ही शंका थी कि इन ग्रन्थों में असम्भव बातें हैं, जो दूसरे मत वाले देखेंगे तो खण्डन करेंगे और हमारे मत वाले दूसरों का ग्रन्थ देखेंगे तो इस मत में श्रद्धा नहीं रहेगी। अस्तु जो भी हो, परन्तु बहुत मनुष्य ऐसे हैं, जिनको अपने दोष तो नहीं दीखते, किन्तु दूसरों के दोष देखने में अति उद्यत रहते हैं। यह न्याय की बात नहीं क्योंकि प्रथम अपने दोष देख निकाल के पश्चात् दूसरों के दोषों में दृष्टि देके निकालें।

नं० ३ अनुभूमिका उत्तरार्ध संत्यार्थ प्रकाश में ईसाई मत विषयक पृष्ठभूमि –

सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मत विषय पुस्तक को देखकर कुछ सम्मति व कुछ असम्मति देवें व लिखें, नही तो सुना करें। क्योंकि जैसे पढ़ने से पण्डित होता है, वैसे सुनने में बहुश्रुत होता है। यदि श्रोता दूसरे को नहीं समझा सके तथापित आप स्वयं तो समझ ही जाता है। जो कोई पक्षपात छोडयानारूढ़ होके देखते हैं, उनको न अपने और न पराये गुण दोष विदित हो सकते हैं। मनुष्य का आत्मा यथा योग्य सत्या–सत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है। जितना अपना पठित व श्रुत है, उतना निश्चय कर सकता है। यदि एक मत वालों दूसरे मत के विषयों को जाने और न जाने तो यथावत संवाद नहीं हो सकता, किन्तु अज्ञानी किसी भ्रमरूप बाढ़े में गिर जाते हैं। ऐसा न हो इसलिये इस ग्रन्थ में प्रचलित सब मतों का विषय थोड़ा–थोड़ा लिखा है। इतने ही शेष विषयों में अनुमान कर सकता है, वे सच्चे हैं व झूठे? जो–जो सर्वमान्य सत्य विषय है, वे तो सब में एक से है। झगड़ा झूठे विषयों का होता है। अथवा एक सच्चा दूसरा झूठा हो तो भी कुछ थोड़ा सा विवाद चलता है। यदि वादी प्रतिवादी सत्या–सत्य निश्चय के लिये वाद प्रतिवाद करे तो अवश्य निश्चय हो जाये।

नं० ४ अनुभूमिका उत्तरार्द्ध सत्यार्थ प्रकाश में मुसलमानों के मत विषय की पृष्ठभूमि –

सब मतों के विषय का थोड़ा–थोड़ा ज्ञान होने से इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें। न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ–झूठ बुराई या भलाई लगाने का प्रयोजन है। किन्तु जो–जो भलाई और जो बुराई है, वही बुराई सबको विदित होवे। न कोई किसी का झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिसकी इच्छा हो व माने व न मानें। किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता।

और यही सज्जनों की रीति है कि अपने व पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों का हठ, दुराग्रह न्यून करे करावें, क्योंकि पक्षपात से क्या–क्या अनर्थ जग में न हुए और न होते हैं। सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षण भंग जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्यों को रखना मनुष्यपन से वहिः है।

इसमें जो कुछ विरूद्ध लिखा गया हो तो लोग विदित कर देंगे, पश्चात् जो उचित होगा तो माना जायेगा, क्योंकि यह लेख हट दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद–विवाद और विरोध घटाने के लिये किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ। क्योंकि एक दूसरे की हानि करने से पृथक रह परस्पर को लाभ पहुँचाना हमारा मुख्य कर्म हैं

लेखक

यह मैंने प्रयास करके सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं से कुछ अंश लिखे हैं, ताकि पाठकों को भूमिकाएं पढ़ने में रूचि बढ़ जायें और अनार्ष ग्रन्थों की सत्यता प्रतीत हो।

–गढ़ निवास मोहकमपुर,
देहरादून, उत्तराखण्ड
मो. ६४११५१२०१६

thearyasamaj.org

शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धान्जलि सभा

गुरूकुल पूठ के प्रचार अधिष्ठाता कवि प्रहलाद सिंह जी वेकल के स्वर्गवास की सूचना से सभी कुलवासी शोक विह्वल हो उठे, गुरूकुल की स्थापना काल से ही वे गुरूकुल के प्रचार प्रसार के लिए आस-पास के जिलों में जन सम्पर्क करते हुए स्कूल एवं विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का उपदेश दिया करते थे, आर्य समाजों के यज्ञ एवं सम्मेलनों में भी शोभा बढ़ाकर उपदेश कविता सुनाते थे, पुरानी पीढ़ी के उपदेशक कवि थे। गुरूकुल की पवित्र यज्ञशाला में सभी ने मिलकर शान्ति यज्ञ किया और श्रद्धान्जलि देते हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने गुरूकुल पूठ के प्रति की गई सेवाओं की चर्चा की तथा परिवार की आत्मीयता का भी परिचय दिया। म.अमर स्वामी जी एवं कुँवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर की परम्परा के पुराने उपदेशकों का एक अध्याय समाप्त हो गया। परमात्मा आत्मीय जन को धैर्य प्रदान करें। गुरूकुल परिवार एवं आर्य मित्र परिवार की ओर से उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

-दिनेश आचार्य, अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. हापुड़

ब्र. प्रवीण कुमार शास्त्री ग्राम चाँदना त. सरधना, मेरठ निवासी के ताऊ श्री रणवीर सिंह जी आर्य का अचानक हृदयगति रूकने से देहान्त हो गया उनके शान्तियज्ञ में गुरूकुल पूठ से सचिन शास्त्री-आचार्य ऋषभ शास्त्री ने भाग लिया गुरूकुल उपाध्यक्ष शौदान सिंह आर्य, ओंकार सिंह आर्य, प्रधान आर्य समाज खानपुर के अधिकारियों ने भी शोक व्यक्त किया है। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी शोक संवेदना व्यक्त करते हुए परिवार में धैर्य की प्रार्थना की है।

-अरविन्द आचार्य
गुरूकुल पूठ-हापुड़

जीत सिंह आर्य प्रधान आर्य समाज नवादा खुर्द-बहादुरगढ़, हापुड़ की माता श्रीमती रामरती जी का देहावसान स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर 23 दिसम्बर, 2014 को हो गया वे 92 वर्ष की थीं। गुरूकुल पूठ के छात्रों ने वैदिक विधि से अन्तिम संस्कार किया। शान्ति यज्ञ में गुरूकुल के आचार्य राजीव जी आचार्य दिनेश जी आचार्य अरविन्द जी आचार्य प्रदीप जी पहुंचे। क्षेत्र से सभी आर्य महानुभाव आये स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने भी पहुंचकर उपदेश दिया एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की ओर से श्रद्धान्जली प्रदान की। चौ. चरण सिंह एवं धर्मवीर सिंह जी तीन पुत्र एवं हराभरा परिवार छोड़कर माता जी ने सुखपूर्वक अन्तिम श्वास लिया।

-प्रमोद आचार्य पसवाड़ा
क्षेत्रीय संयोजक, गढ़मुक्तेश्वर

जिला सघन क्षेत्र के समन्वयक मुरादाबाद की पहिचान संघर्ष शील व्यक्तित्व चौ. भगवन्त सिंह जी आर्य प्रधान आर्य समाज सिंह पुरसानी जि. सम्भल की धर्मपत्नी श्रीमती मुख्त्यारी देवी जी का देहावसान 23 तारीख में हो गया। वे पूर्ण स्वस्थ थीं चौ. साहब के कार्यों में सदैव सहयोग करती थीं। उनका अभाव सदैव याद रहेगा। शान्ति यज्ञ किया गया गुरूकुल पूठ की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की गई।

-रणजीत सिंह आर्य
मन्त्री-आर्य समाज सिंहपुर
गुरूकुल ततारपुर-हापुड़

गुरुकुल पूठ में शोकसभा एवं शान्ति यज्ञ

गुरूकुल पूठ के संरक्षक स्वामी शरणानन्द जी सरस्वती, मुरादाबाद एवं गुरूकुल के हितैषी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीरदल के महामन्त्री ब्र. राज सिंह आचार्य के अचानक देहावसान की सूचना से सभी कुलवासी शोक मग्न हो गये गुरूकुल की पवित्र यज्ञशाला में शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया एवं बाद में शोक सभा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में आयोजित हुई गुरूकुल के वार्षिक सम्मेलन पर लगातार 3 दिन तक योग एवं वेदज्ञान आबाल वृद्ध को परिचित कराया था वे दिन सभी को याद हैं स्वामी जी में उनके जीवन की स्मृतियाँ सुनाकर सभी को भावविभोर कर दिया और उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प लिया। सभी कुलवासी एवं आचार्यगण तथा आर्यमित्र परिवार अपनी श्रद्धान्जलि प्रदान करते हैं।

-दिनेश आचार्य
अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

ये जीवन मिला क्यों?

-संजीव रूप आर्य

कभी क्या है सोचा, ये जीवन मिला क्यों ?
गुलाब बीच काटों के बोलो खिला क्यों ?
यह मानव का चोला है सबसे निराला,
सभी योनियों में है सबसे यह आला।
है सबसे यह बेहतर तो इससे गिला क्यों ?
न कुछ साथ लाए थे अगर जानते हो,
न कुछ साथ जायेगा, अगर मानते हो।
तो साधन जुटाने का ये सिलसिला क्यों ?
खबर कुछ नहीं रूप किसी को भी पलकी,
है मूर्ख जो बातें करता है कल की,
तो भक्ति भजन से है ये फासला क्यों ?

-गुधनी बदायू (उ.प्र.)
मोबाइल-09997386782

शांतिवन आश्रम (टांगरपाली) में युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

पश्चिम में आर्ष पाठविधि का निःशुल्क शिक्षण केन्द्र महाविद्यालय गुरूकुल आश्रम आमसेना द्वारा संचालित शांतिवन आश्रम टांगरपाली में युवा चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल शिविर उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 25 से 30 दिसम्बर तक योग्य शिक्षकों द्वारा चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा के गुर सिखाये गये।

समापन समारोह पर गुरूकुल आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, श्री अशोक मेहेर, श्री विभूति साहू, श्री कृपा साहू, श्री तपोधन प्रधान तथा अन्य अतिथिगणों की उपस्थिति थी। कार्यक्रमोपरान्त स्वामी व्रतानन्द के द्वारा गरीबों को कम्बल वितरण किया गया। अन्त में शांतिवन आश्रम के आचार्य स्वामी नारदानन्द जी द्वारा आर्यवीरों तथा अतिथि महानुभावों को शुभकामना दी शांतिपाठ पूर्वक इस शिविर का समापन हुआ।

डॉ. कुज्जदेव मनीषी, उपाचार्य
गुरूकुल आश्रम आमसेना

आर्य समाज अजीतमल के प्रधान को पत्नी शोक

आर्य समाज अजीतमल इटावा के प्रधान श्री शिवसागर त्रिपाठी की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा त्रिपाठी का दिनांक 7.12.14 को निधन हो गया। वे 56 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गयी हैं। उनका अन्तिम संस्कार यमुना के सिकरोड़ी घाट पर सम्पन्न हुआ। वे मृदु भाषिणी एवं धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। उनके निधन पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा इटावा के प्रधान श्री सत्यवीर शास्त्री एवं मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य ने शोक व्यक्त करते हुये परमात्मा से दिवंगतात्मा की सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनः शान्ति व धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

-वेद प्रकाश आर्य, मंत्री

सत्य प्रकाश आर्य को भात् शोक

बाराबंकी निवासी आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्य प्रकाश आर्य के ज्येष्ठ भ्राता श्री विद्याधर प्रधानाचार्य जू.हा. स्कूल का आकस्मिक निधन हृदय गति रूक जाने से लखनऊ के सहारा अस्पताल में 27 दिसम्बर को हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से आर्य समाज के पुरोहितों ने कराया। दिवंगतात्मा की सद्गति व दुःखी परिजनों को मनः शान्ति की प्रार्थना आर्य मित्र परिवार की ओर से विमल किशोर आर्य ने की।

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१९२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में
....
....
....

आदर्श कन्या गुरूकुल आमसेना में आर्यवीरांगना प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

बालकों की तरह विद्यालयों में पढ़ने वाली कन्याओं को भी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से परिचित कराने तथा उन्हें आत्मरक्षा की शिक्षा देकर साहस एवं निर्भिक बनाने के लिए आदर्श कन्या गुरूकुल आमसेना में आर्य वीरांगना शिविर के सफल आयोजन में 150 से अधिक कन्याओं ने गुरूकुल के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के मार्ग दर्शन में वैदिक धर्म की सिद्धान्तों के ज्ञान प्राप्त करने के साथ आत्मरक्षा के उपायों का ज्ञान भी प्राप्त किया। इन कन्याओं को प्रशिक्षण देने के लिए वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री हरि सिंह जी आर्य दिल्ली से पधारे थे। कन्याओं को प्रेरणा देने के लिए स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य कुज्जदेव मनीषी, पूर्व विधायक श्री राजु भाई धोलकिया, आचार्या पुष्पाज्जली शास्त्री का उपदेश निरन्तर होता रहा। इस प्रशिक्षण के सारी आर्थिक व्यवस्था गुरूकुल आश्रम की ओर से की गयी। इस शिविर का उद्घाटन स्थानीय विधायक श्री बसन्त भाई पण्डा ने किया।

-मनुदेव वाग्मी

स्वामी दयानन्द स्टडीज सैन्टर

बड़े हर्ष की विषय है कि यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन भारत सरकार की ओर से प्रदत्त आर्थिक सहयोग से दोआबा कालेज जालन्धर में 'स्वामी दयानन्द स्टडीज़ सैन्टर' सत्र २०१४–१५ से स्थापित किया गया है। इस सैन्टर के माध्यम से स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं को विद्यार्थियों तथा आम जनता तक पहुँचाने के साथ–साथ शोधकार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि भी आयोजित किए जाएंगे। स्वामी दयानन्द के समस्त साहित्य को डिजिटल रूप में इण्टरनेट (**www.doabacollege.net**) पर उपलब्ध कराने की योजना भी तैयार की गई है। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों, आर्य समाजिक संस्थाओं तथा आर्यजनों से निवेदन है कि यदि उनके पास स्वामी दयानन्द का कोई भी ग्रन्थ किसी भी भाषा के किसी भी फॉन्ट (चाणक्य, कृतिदेव, शूषा आदि) में कम्पोज किया हुआ है तो वे हमारे **email : dayanandstudy@doabacollege.net** पर वह सामग्री भेजने की कृपा करें। हम उस सामग्री को इन्टरनेट के लिए यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित कर कालेज की उपरोक्त वैबसाइट पर अपलोड कर देंगे। आशा है ऋषिवर दयानन्द के इस पुनीत कार्य में आपका सहयोग हमें अवश्य प्राप्त होगा।

(डा. नरेश कुमार धीमांन)
प्राचार्य
दोआबा कालेज, जालन्धर

गायत्री महायज्ञ, योग साधना एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

दिनांक 21 दिसम्बर रविवार से 28 दिसम्बर रविवार
स्थान-ओमानन्द योगाश्रम, देवधर्म, इन्दौर (म.प्र.) में सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रातः 5 से 6 बजे तक ध्यान-प्राणायाम योगासन आदि ब्रह्मर्षि स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा
प्रातः 7 से 8:30 बजे तक प्राकृतिक चिकित्सा, डॉ. रघुरंजन जैन इन्दौर
प्रातः 8:30 से 9:00 बजे तक प्रातः राश,
प्रातः 9 से 10 बजे तक गायत्री महायज्ञ-आचार्यत्व-ऋषिका आत्मदीक्षिता सरस्वती
प्रातः 10 से 11 बजे तक प्रवचन एवं मधुर भजन-ऋषिका आत्मदीक्षिता सरस्वती
प्रातः 11 से 12 बजे तक प्रवचन-ब्रह्मर्षि स्वामी ओमानन्द सरस्वती
शक्ति विद्या, यज्ञ विद्या, प्राण विद्या, स्वर विद्या, शब्द विद्या, मंत्र विद्या, आत्मविद्या, ब्रह्म विद्या विषय पर वैज्ञानिक वेद प्रवचन
दोपहर 2 से 4 बजे तक बूटी चिकित्सा-भारत के प्रसिद्ध जड़ी-बूटी विशेषज्ञ वैद्यराज श्री भंगीलाल उइके, ग्राम गोनापुर चौकी, पो. पट्टनम तहसील मुलताई जिला बैतूल (म.प्र.) सन्त श्री शभलू बाबा उइके, ग्रा. मोहासा, तोला धामासा पो. मांगरूल जिला होशंगाबाद (म.प्र) द्वारा समझाई गयी

स्वास्थ्य चर्चा-

सेहत के लिए करीपत्ता (प्राकृतिक-चिकित्सा)

-डॉ. बिमलारानी

करीपत्ता रोग नियामक, संक्रमणों का कन्ट्रोलर, खनिज तत्वों, रासायनिक-तत्वों से भरपूर, रक्तचाप नियन्त्रक, पाचनक्रिया को सुगम रखने वाला, रक्त अल्पता दूर करने वाला, रक्त में होमोग्लोविन बढ़ाने वाला, गुर्दे के रोगों का विनाश करने वाला, शरीर में अम्ल-पित्त-नाशक, आँतों में यदि कृमि हों उनको नष्ट करता है। प्रदाह दूर करने वाला, स्मरण-शक्ति, नेत्र-ज्योति विकसित करने वाला, मानसिक विकारों को दूर करने वाला, प्रकृतिक देन है करीपत्ता। जो प्रकृति द्वारा बिना मिलावटों के मानव-जाति को उपलब्ध है। इसी करीपत्ते की प्राकृतिक-तत्त्वों की सूची को नीचे दिया जा रहा है।

करीपत्ता में उपलब्ध रासायनिक अंश और विटामिन क्लोरोफिल 22%, आयरन 14%, क्लोरोक्वीन 7%, कैलशीयम 10%, क्लोरीन 5%, फोलिक ऐसिड 10%, मेगनीशियम फलौरा 7%, जिन्क 4%, सोडियम 11%, लोनीयम 4%, विटामिन में (A/D, B12) बी. कम्पलैक्स विटामिन (EK) प्राकृतिक रूप में सब मिलाकर 14%, हाइक्लोराइड 8%, कारबोहाइड्रेट 10%, विटामिन C 7% Lycopene-Salonzmc, न्जाइम 6%, प्रतिदिन 5 हरे पत्ते करीपत्ते के चबा चबा कर खाइए और नीरोगी स्वस्थ और चिरायु जीवन पाइए।

Medical Gurispnideuce में करीपत्ते का लाइलाज रोगों मधुमेह-कैंसर-ऐडस-दमा-टी.बी. में नियामत कहा है। पर मंहगी मंहगी दवाओं में इसका मूल्यांकन डाक्टर/मरीज नहीं करते हैं। पैथोलौजी में भी करीपत्ते को दवा नहीं बताते चाहे करीपत्ते को दवाओं में डाला जाता है। ताजे हरे करीपत्ते की बातें ही कुछ और है। ताजे-ताजे करीपत्ते का हाईपरटैशनं में विशेष महत्त्व है इसका रस निम्न रोगों, दोषो, विकारों को दूर करता है-

1. मुँह से बदबू नहीं आएगी करीपत्ते चबाने से इनका रस दांतो के कमियों को मार डालता है और पायरिया तक के विकारों को नष्ट करता है। मसूढ़ों और दाँतों की जड़ों को मजबूत बनाता है।
2. हार्ट के रोगों नसों में रक्त जमना रक्त का गाढ़ापन हारमोन्स की कमी से स्नायुतन्त्रों को सक्रिय रखता है। कैलिशयम होने से कड़ी पत्ते में हड्डियाँ, अस्थिपिंजर और माँस-पेशियों का खोल जो अस्थियों पर चढ़ा रहता है स्वस्थ विकसित और साक्रिय रहता है।
3. डायबटीज नहीं होने देता है करीपत्ता रोज 5 पत्ते चबाइए और स्वस्थ रहिए और चिरायु जीवन पाइए। प्यास भी कम लगेगी भूख भी अच्छी लगेगी क्योंकि ऐसिड नहीं बनेगा खाना पचाने वाला रस प्रचुर बनेगा।
4. वचन भी नहीं बढ़ेगा चर्बी वसा को करीपत्ते का रस शरीर में जमने रूकने नहीं देता। रोज चबाने से रक्त गाढ़ा नहीं होगा और धमनीयों शिराओं में सक्रिय आवागमन करेगा तरल रहने से।
5. घर में तुलसी के पौधे की तरह करीपत्ते का पौधा भी उगाइए जो सरलता से उगता है पनपता है पत्ते देता है। करीपत्ता रक्त का लेविल बढ़ने नहीं देता। नींद अच्छी लाता है। मूत्राशय अण्डकोषों के विकारों को भी हरे करीपत्ते का रस नीरोगी रखता है। सतर्क रहे नीरोगी रहें करीपत्ता चबाकर।

-बिमला होम
बुलन्दशहर-यू.पी.

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।